Describe the causes of Industrial fatigue.
औद्योगिक थकान से क्या अर्थ है? औद्योगिक थकान के कारणों का विश्लेषण करें।

Fatigue

3/10 औद्योगिक थकान क्या है?

औद्योगिक क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति ने एक नई क्रांति उत्पन्न कर दी है। उन्नत मशीनों के विकास से उत्पादन में बहुत प्रगति देखी जा रही है और साथ-साथ कार्यकर्ताओं के शारीरिक श्रम की मात्रा में भी निराकरण हुआ है। परिणाम स्वरूप शारीरिक थकान, मनोवैज्ञानिक उदासीनता तथा दुर्घटना आदि का बहुत अंशों तक निवारण हुआ है। मशीनों का संचालन मनुष्य के द्वारा होता है। मनुष्य थक जाता है, लेकिन मशीन नहीं थकतीं, उन्हें बन्द करना पड़ता है। मशीनें इसलिए बन्द नहीं होता है कि मनुष्य थक गया है। बल्कि जब मनुष्य थक जाता है तो मशीनें बन्द की जाती है। अतः इस समस्या का समाधान करना औद्योगिक मनोविज्ञान का प्रमुख विषय है। उद्योगपति तथा कर्मचारी दोनों के लिए इसका अध्ययन जरूरी है।

किसी भी औद्योगिक या संगठन परिस्थिति में थकान एक ऐसी जटिल धारणा है जिसे परिभाषित करना बड़ा कठिन है। इसका कारण यह है कि थकान की अभिव्यक्ति (manifestation) विविध रूपों में होती है। कभी यह उत्पादन ह्रास के रूप में प्रकट होता है, परन्तु कार्य करनेवाले व्यक्ति की भावनाओं में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं देखा जाता। अतः कभी थकान के कारण व्यक्ति का भाव-पक्ष (feeling tone) प्रभावित होता है, पर उसके उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कभी तो थकान के फलस्वरूप कार्यकर्ता का भाव तथा उत्पादन दोनों में ही ह्रास होने लगता है। परन्तु शारीरिक परीक्षणों से थकान प्रकट नहीं होता। इस प्रकार, थकान एक ऐसी बहुरंगी धारणा है जिनकी अनेक अभिव्यक्तियाँ हो सकती है। इसी कारण कुछ मनोवैज्ञानिकों ने थकान को परिभाषित करना असंभव प्रमाणित किये हैं,-

फिर भी, थकान एक ऐसी घटना है जिसका कोई वैज्ञानिक और सर्वमान्य आधार नहीं है पर अधिकाधिक मनोवैज्ञानिकों ने थकान के तीन पहलुओं का इस प्रकार उल्लेख किया है:—

(i) दैहिक पहलू (पक्ष) (Physiological aspect) — थकान दैहिक ह्रास की अवस्था के रूप में।

(ii) मनोवैज्ञानिक पहलू (पक्ष) (Psychological aspect) — थकान एक मानसिक घटना के रूप में, जिसमें अप्रिय तथा थककर चूर होने का विशुद्ध भाव अंतर्निहित है।

(iii) उत्पादन-संबंधी पहलू (Productional aspect) — थकान, एक जटिल घटना के रूप में, जो ~~अनवरत~~ अधिकतर कार्य के फलस्वरूप उत्पन्न होती है और जिसकी अभिव्यक्ति निम्न उत्पादन-स्तर के रूप में होती है।

(i) दैहिक पक्ष — काम करने से दैहिक रूप से थकान में रक्त में ग्लाइकोजिन (Glycogen) स्तर में ह्रास हो जाता है और मांसपेशियों में विषैले पदार्थ (Toxic substances) एकत्र हो जाते हैं। जिससे थकान का अनुभव होता है। ग्लाइकोजिन (Glycogen) खून की चीनी है जिससे काम के समय मांसपेशियों में शक्ति तथा ऊर्जा प्राप्त होता है। लम्बे समय कार्य करने से ग्लाइकोजिन समाप्त हो जाता है और उसकी परिणति बहुतेरे विषैले पदार्थों जैसे— लैक्टिक अम्ल, कार्बन-डाइ-ऑक्साइड आदि में हो जाती है। इन व्यर्थ एवं विषैले पदार्थों के संग्रह के फलस्वरूप मांसपेशियाँ काम के लिए सक्षम नहीं रह जाती। फिर, लगातार काम करने से मांसपेशियों में पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन की आपूर्ति नहीं हो पाती। और रक्त की रासायनिक बनावट में परिवर्तन हो जाता है जिससे थकान का अनुभव होता है।

(ii) मनोवैज्ञानिक पक्ष (Psychological aspect):— Viteles (वाइटलेस) के अनुसार अविराम कार्य करने से मनोवैज्ञानिक स्तर पर कार्यकर्ता को थकान के अनुभव के साथ-साथ कई विरोधी भावों की एक मिश्रित अनुभूति होती है, जैसे— ध्यान एकाग्रचित करने में कष्ट, शरीर चूर-चूर होने की असामान्य अनुभूति, कार्य जारी रखने की अनिच्छा, संवेगात्मक मनोवृत्ति में परिवर्तन, आराम करने की प्रबल इच्छा इत्यादि।

औद्योगिक पक्ष अर्थात्,

(iii) उत्पादन - संबंधी पहलू (पक्ष) (Producional aspect):-

थकान का औद्योगिक पक्ष, उत्पादन संबंधी पक्ष है जिसमें लगातार गिरावट आने लगती है। उत्पादन स्तर में गिरावट के साथ-साथ उत्पादन वस्तु के गुण (quality) में भी गिरावट देखी जाती है। अतः थकान की कोई भी व्यावहारिक परिभाषा इन तीनों पक्षों को ध्यान में रख कर किया जा सकता है।

(गिलब्रेथ) Gilbreth & Gulbreth के अनुसार:-

थकान की एक उपर्युक्त परिभाषा है:—

"किसी काम के निरन्तर करने पर आनन्द की अनुभूति का ह्रास, प्रसन्नता का कार्य करने के घंटों में अभाव, कार्य करने की शक्ति का ह्रास, तथा उत्पादन स्तर में ह्रास को थकान कहते हैं।"

इसी प्रकार (स्मिथ) Smith के अनुसार:—

"जब व्यक्ति थक जाता है तब वह उकता हो जाता है तथा ठीक प्रकार से चिन्तन नहीं कर पाता। वह यह सोचने लगता है कि अपने शरीर के साथ इतना कार्य करना अन्याय करना है। सबसे खराब बात यह है कि थका हुआ आदमी बहुत जल्दी नाराज हो जाता है। ऐसे कार्य भी वह कर बैठता है जिसे सामान्य अवस्था में कभी भी नहीं कर सकता।"

"When a man is tired out, he not only broods darkly, but he doesn't think clearly. He does things he wouldn't do when rested. He is easily depressed. He readily imagines injustice. He cannot turn his mind from imagined wrongs against himself to focus it upon the wrong in what he is doing. Worst of all a tired man is as quick to anger as he is slow stupid in thought."